*i*Journals: International Journal of Social Relevance &Concern (IJSRC)
ISSN-2347-9698
Volume 8 Issue 12 December 2020

माटी का कर्ज

डॉ. पी. राजरत्नम

एसोसिएटप्रोफेसरएवं विभागाध्यक्ष
हिंदी विभाग, तमिलनाडु केंद्रीय विश्वविद्यालय
तिरुवारूर- 610005
मोबाइल नंबर : - 9486067330
ई मेल –rajaretnampdkt@gmail.com

भारत देश की मिट्टी में कुछ तो जरूर ऐसा है जिससेहर बार इस धरती पर जन्म लेने का दिल चाहता है। क्योंकि इस मिट्टी में हमारा गौरवमय इतिहास , वीरता की गाथाएँ , प्रेम की भावनाएं,मेहनत का मूल्य एवं अनगिनत यादें समाहित है I वैसे ही अपनी कुछ यादें, मेहनत की महिमा एवं श्रद्धा की भावनाओं को इस लेख के जरिए लेखक प्रस्तुत कर रहा है I लेखक के पिता एक साधारण एवं सर ल जीवन बिताने वाले कृषि मजदूर थे, अपनी पत्नी और चार बेटों सहित रह ते थे । उन्होंनेअपने बेटों की प्रारंभिक शिक्षा का प्रबंध किया और अपनी शारीरिक श्रम से कमायें रुपयों की बचत करके गांव में आधा एकड़ जमीन खरीद ली I गांव में उनका अच्छा खासा नाम था, इसलिए जान पहचान के किसी जमींदार ने अपनी पूरी जायदाद बेचने के बाद जो शेष बच गई (आधा एकड़) जमीन उनसे खरीदने के लिए आग्रह किया, तो उन्होंने किसी भी प्रकार से कम दाम में वह जमीन खरीद ली I साथ ही पैतृक संपत्ति के रूप में सवा एकड़ जमीन मिली। दोनों मिलाकर पौने एकड़ जमीन हो गई I चारों बेटों की शादी हो गई और सब के बाल बच्चे भी हुए । इस बीच छियासी वर्ष की उम्र में उनका देहांत हो गया । उनके देहांत ने उनके बेटों को शोक में डूबा दिया I

जब जायदाद की बटवारे की बात आयी तो बड़े बेटे को कुछ ज्यादा संपत्ति देने की बात हुई क्योंकि उसके पास नौकरी नहीं थी साथ ही कमाई भी कम थी I बटवारे का प्रबंध तीसरे बेटे की कोशिश से हुआ जो इस लेख का लेखक भी है I

लेखक को पहले इस जायदाद से कोई मोह नहीं था क्योंकि वह खुद अपने पैरो पर खड़ा था जिस कारण अन्य भाइयों की तुलना में उसे पैसों की कमी नहीं थी I लेखक को ज्ञात है पिताजी ने इतनी सी जमीन खरीदने में कितनी मुसीबतें उठाई थीं I तीनों भाइयों में लेखक की पढ़ाई अच्छी हुई जिस कारण आजकल वहअच्छे सरकारी पद पर कार्यरत है I भाइयों के दबाव के कारण लेखक को भी तीन ग्राउंड जमीन लेनी पड़ी, जो पिता की कड़ी मेहनत से खरीदी हुई थी ।लेखक का मानना था की बटवारे में कोई जमीन नहीं लेनी है मगर भाइयों के कहने पर उसको बरबस लेनी ही पड़ी I अब लेखक को इस जमीन पर अनादि मोह है I हालाँकि वो जमीन उपजाऊ नहीं है फिर भी उस जमीन की मिट्टी एकदम अच्छी है, अगर पानी की सुविधा हो तो उस में जो

i.Journals

भी फसल लगाईं जाए अच्छी पैदावार देगी I उस जमाने में (पचास साल पहले) धनी लोगअपनी जमीन या बगीचे में पंप सेट लगाते थे पर गरीबों को वह मुमकिन नहीं था। हलांकि वह जमीन वर्षा पर निर्भर थी फिर भी साल भर उसमें सब्जी के पौधे, धान के पौधे, टैपियो के (एक प्रकार का कं द जो खाने योग्य) केले के वृक्ष, दो चार आम वृक्ष, कटहल के पेड़, काजू के पेड़ आदि लगते थे I स्कूल के दिनों में हम वहाँ कम से कम दो घंटे और छुट्टियोंके दिनों में कई घंटे जाकर काम करते थे। बेटों को छोटे- छोटे काम देकर वे (पिता) कृषि मजदूरी के काम पर जाते थे I यहाँ तक स्कूल से आकर भी बेटों को कुछ न कुछ काम करना पड़ता थाI बच्चों का बेकार घूमना , बैठना पिता को बिलकुल पसंद नहीं था I चारों भाइयों में बड़ावाला नेतागिरी करता था जबकि बाकीको उनके अधीन में ही रहना पड़ताथा इसलिए आज तीनों की स्थिति अच्छी है I

उस जमीन में साल में एक बार सौ केले के वृक्ष लगते थे , जिन्हें हम चारों भाई मिलकर दूर तालाब से कन्धों पर पानी ढोकर सिंचाते थे, खाद डालना, मिट्टी खोदकर बराबर करना आदि I केले के फलोंको पकते समय चोरी से बेचने के लिए रात भर संरक्षण में लगना , धान एवं सब्जी को दूर जाकर बेचना , बाजार से वापस आते समय घर की आवश्यक चीज़ें लेकर आना आदि कारणों से पढ़ाई में कम ही ध्यान दे पाते थे I आज की स्थिति बिलकुल अलग है I घंटों तक कमरे में बंद रहकर पढ़ाई में ध्यान देते हैंI उस जमाने में कम समय होने के बाद भी बच्चे विषय को गंभीरता से ग्रहण करते थे I

तीन ग्राउंड जमीन के मिलते ही लेखक उसे अपना स्वर्ग समझकर उसके अहाते के बनानेके बारे में सोचाI कारण यह था की कहीं कोई उस जमीन का दुरुपयोग न करें एवं उस जमीन से होकर सड़क बनवाने का जो लोग प्रयास कर रहे थे उन्हें रोका जा सके I जमीन की लम्बाई ज्यादा थी चौड़ाई कम थी इसलिए कोई सड़क बन गयी तो काम खत्म I लेखक नौकरी के कारण कहीं दूर रहते थे इसलिए लोग इस मौके का फायदा उठाना चाहते थे I जिस मिट्टी को स्वर्ग समझा उसकी रक्षा करना अत्यंत आवश्यक समझ कर अहाते बनवाने के लिए छुट्टियों में एक हफ्ता इस कार्य में लगायाI प्रांगण को बनवाते समय रह-रहकर पिता कीयादें और ज्यादा सताने लगींI किसी प्रकार उन स्मृतियों को मन में संजोकर अहसास करने लगा कि जमीन के खरीदने का प्रयास, चारों बेटों को काम में लगवाना, काम के समय सख्त रहना, उस जमीं के प्रति उनकी चाहत एवं अपनी जिंदगी लगाना आदि I निम्न मध्यम वर्ग के आदमी की इस प्रकार की लगन स्वाभाविक ही है I ऐसा मानों वे माटी का कर्ज चुकाने को हीअपनी जिंदगी समझते थे I किसी कवि ने ठीक ही कहा है: -

मातृभूमि की माटी चन्दन

आओ तिलक लगाए I

इस माटी में जन्म मिला

यह सोचकर हम इतराए I

iJournals

बस वे मानते थे की माटी में ही उनका जन्म हुआ हो I जब वर्षा ऋतु में बादलों से वर्षा उमड़ - उमड़कर आकाश में घिर जातीतब उनके दिल में आनंद की सीमा नहीं होती थीI साथ ही मन में कमी भी महसूस होती थी की पर्याप्त काम हम नहीं करपाए,अगर ऐसा करतातो इस मौसम में फसल के लिए बहुत काम हो जाताI माँ को जब कभी बेटों को काम में लगवाते तो रोकने का प्रयास करती थीं,लेकिन पिता कहा मानने वाले थे I माँ द्वारा अपनी संतान को दिए गए संस्कार जीवन के अंत तक कायम रहते है वैसे ही कुछ संस्कार माँ ने अपने चारों बेटों को दियाI आंतरिक रूप से पिता भी बहुत प्यारे थे I

लेखक को मिली हुई जमीन पर जब सड़क बनवाने का प्रबंध हो रहा था तो अफ़सोस यह हुआ कि कहीं उसकी इच्छा में पानी न फिर जाए I खेद इस बात की थी की छोटी - मोटी उपजाऊ, कृषि प्रधान आमदनी देने वाली जमीनों की हालत यह हो तो भविष्य में भोजन की व्यवस्था क्या होगी ? इस दृष्टिकोण से भी जमीन की सुरक्षा में लग गया I अच्छी एवं गेरुआ रंग की मिट्टी होने के कारण जो भी फसल उसमें लगाए उसका महसूल बढ़िया मिलताI वर्षाकाल के अलावा पानी की व्यवस्था चारों भाईमिलकर करते थे Iजो भी महसूल मिलता है उसकी अलग मांग थी क्योंकि उसमें गुणवत्ता की चीज़ें मिलती थी I धान या सब्जी को चारों भाइयों में से एकाध को बाजार ले जाकर बेचना होता था। यह बाजार घर से पांच किलो मीटर कीदूरी पर था I चारों की आठवीं कक्षा के बाद की पढ़ाई पांच किलोमीटर दूरी पर पैदल स्कूल जाकर हुई I यह एक प्रकार का अनोखा अनुभव था जिससे कठिनाइयों को सामना करने की क्षमता भी मिली I

अहाते के साथ फाटक लगाने के कारण जायदाद का मूल्य बढ़ गया साथ हीअगल-बगल वाले ईर्ष्या भी करने लगे जो इसका बंजर भूमि के रूप में दुष्प्रयोग करते थे I अब इस भूमि को साल के हिसाब से पांच हजार रुपये बंटा देकर कृषि करने के लिए मांगते है I लेकिन इस बात पर भय है कि अनावश्यक खाद एवं नमक डालकर जमीनकी उर्वरकता को ख़राब न कर दें Iलेखक ने अपने बड़े भाई को उसकी रक्षा में लगाया है I अपनी सेवानिवृत्ति के बाद गांव जाकर पंप सेट लगाकर कृषि करने की लेखक की प्रबल इच्छा है, लेकिन उसके लिए अभी पांच साल और इंतज़ार करना पड़ेगाI

लेखक को खेतों का दृश्य अनुपम एवं रमणीय लगता है एवं शुद्ध उन्मुक्त पवन , खुली धूप, मनोहर प्रभात, शोभन सायंकाल, धान, सरसों, गन्नों का खेत और प्रकृति की अपूर्व छटा आदि गाँवों में ही देखने को मिलती है न की शहर में I यह जमीन लेखक के लिए सिर्फ जमीन ही नहीं बल्कि स्वर्ग भूमि है, जिसमें हर क्षण उसेअपने पिताजी की छाया दिखती है I उसका मानना है की वे उसमें जिंदा हैंI कहते हैं :-

“आदमी वहाँ रहता है, जहां उसका दिल रहता हैI”

यह विदित है की खेतों पर काम करनेवाले किसानों के लिए कोई आदर नहीं बल्कि जमीन बेचकर विदेश जाकर फिर रोगग्रस्त होकर आने वालों का मान , सम्मान है I आज किसानों के लिए कोई मुनाफा भी अधिक नहीं मिलता I इस स्थिति में सुधार होना अनिवार्य है I जो जमीनहै उसे सदुपयोग में रखना सबका कर्तव्य

iJournals

होना चाहिए I लेखक सेवानिवृत्ति के बाद उस जमीनके सदुपयोग के द्वारा पिता जी की स्मृतियों को बनाकर रखने के प्रयास में हैI उसी मिट्टी में पुनः जन्म भी लेना चाहता है I

जिस माटी में जन्म लिया

जिस माटी में पल पाएं

जिस माटी में खेलकूद कर

गीत प्रेम के गाए हैं

समझो उसे न माटी

वह माटी अपनी माँ बाप है

सावधान रहना है उस

माटी की लाज न जाना I

iJournals